मन चंचल चल राम शरण में

माया मरी ना मन मरा, मर मर गया शरीर ।
आशा तृष्णा ना मरी, कह गए दास कबीर ॥

माया हैं दो भान्त की, देखो हो कर बजाई ।
एक मिलावे राम सों, एक नरक लेई जाए ॥

मन चंचल चल राम शरण में ।
हे राम हे राम हे राम हे राम ॥

राम ही तेरा जीवन साथी,
मित्र हितैषी सब दिन राती ।

दो दिन के हैं यह जग वाले,
हरी संग हम हैं जनम मरण में ॥

तुने जग में प्यार बढाया,
कितना सर पर भार उठाया ।

पग पग मुश्किल होगी रे पगले,
भाव सागर के पार तरन में ॥

कितने दिन हंस खेल लिया है,

सुख पाया दु:ख झेल लिया है ।

मत जा रुक जा माया के संग,
डूब मरेगा कूप गहन में ॥

Source: https://www.bharattemples.com/man-chanchal-chal-raam-sharan-me/

Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans

Facebook: https://www.facebook.com/bharattemples/
Telegram: https://t.me/bharattemples
Youtube: https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw